"सिपाही की माँ, बेटे की यादों में"

इतना बेचैन नहीं कि आकर रुके तुम,
इतना चैन नहीं कि कभी न आप तुम।
इतना खुशी नहीं आकर तुम जाप,
इतना दुख है तुम सोच भी नहीं पाप।
आ जा मेरे प्यारे,
बस एक बार आकर मिले...
मिलने के बाद जाप,
कभी भी कहीं भी जाप!

चाहे आपगा लेकर खाना,
चाहे आपगा लेकर तानना।
चाहे आकर मुझे खिलाना,
चाहे आकर मुझे सुनाना।
खुशियाँ लेकर आना, हँसी लेकर आना।
दुख देकर जाना, आँसू देकर जाना।
नहीं मन को शिकायत...
बस एक बार आकर ही जाना!!

हमेशा जब आते थे,
पता था तुम जाओगे।
इस बार जब चले गए,
पता नहीं था कभी न वापस आओगे!
तरस रही हूँ मिलने को,
तड़प रही हूँ बताने को,
कि बन गई इस माँ नादान!
बिन अपने बेटे के!
बिन उसके प्यार के।

ढूँढती हूँ हर गली में,
पूछती हूँ हर इंसान से।
लोग कहते हैं जा चुके हो तुम,
कहते हैं कि कभी न आओगे तुम।
लोग कहते हैं कि हूँ मैं पागल।
मैं कहती हूँ है वो पागल।
सच तो यही कि है पागल मैं!
सच तो यही कि कभी न आओगे तुम!

मना किया था जाने को!
कहे तुम : "पुकार रहे हैं जाने को।"
पुकार था किसकी वो?
बन गम माँ से जरूरी वो!!
बोला तुम "पूरी आवाज से...
"है वो भारत माता की,
जो है सबकी माँ!"

आखिर गम तुम उनके पास,
बन गया उनकी खाँस,
बन गया एक सैनिक।
देश की सेना का एक वीर सैनिक!
फिर भी आते थे तुम मेरे पास,
पुकारते थे वो उनके पास,
मगर आखरी पुकार लिया जान तुम्हारी!!
बना दिया मुझे एक बिगारी...!

बन गम तुम ब्रिटिश की निशानी!
मिल गम तुम इस मिट्टी से!
आज भी हूँ मैं गर्व इस बात से,
हूँ मैं तुम्हारी माँ!!
बस एक ही दुख है मन में,
एक बार आकर जाना,
अपनी माँ की आशिर्वाद लेकर जाना!

मगर क्यों करूँ मैं इंतजार?
है तो तुम ठीक सामने ही...
इस मिट्टी के उस पार,
करके मुझे तंग बार बार।
बिना बात किम,
बिना सामने आम,
बिना मुँह दिखाम।
ओ मेरे प्यारे बेटा,
बस एक बार सामने आकर जाना!!